।।श्री।।

अथ श्रीव्यंकटेशस्तोत्रम्

(या स्तोत्राचा पाठ दररोज करतात. शक्यतो पाठ चालू असताना खंड पडू देऊ नये. लागोपाठ तीन रात्री स्नान करून दर रात्री एकवीस वेळा पाठ केला असता विशेष फलदायी असतो.

श्रीगणेशाय नमः।

श्रीव्यंकटेशाय नमः।

ॐ नमो जी हेरंबा। सकाळादि तूं प्रारंभा।
आठवूनि तुझी स्वरूपशोभा। वंदन भावे करीतसे।।१।।
नमन माझे हंसवाहिनी। वाग्वरदे विलासिनी।
ग्रंथ वदावया निरूपणी। भावार्थखाणी जयामाजी।।२।।
नमन माझे गुरुवर्या। प्रकाशरूपा तूं स्वामिया।
स्फूर्ति द्यावी ग्रंथ वदावया। जेणे श्रोतया सुख वाटे।।३।।
नमन माझे संतसज्जनां। आणि योगियां मुनिजनां।
सकळ श्रोतयां सज्जनां। नमन माझे साष्टांगीं।।४।।
ग्रंथ ऐका प्रार्थनाशतक। महादोषासी दाहक।
तोषूनियां वैकुंठनायक। मनोरथ पूर्ण करील।।५।।
जयजयाजी व्यंकटरमणा। दयासागरा परिपूर्णा।
परंज्योति प्रकाशगहना। करितो प्रार्थना श्रवण कीजें।।६।।
जननीपरी त्वा पाळिलें। पितयापरी त्वां सांभाळिलें।
सकळ संकटापासूनि रक्षिलें। पूर्ण दिधलें प्रेमसुख।।७।।
हे अलोलिक जरी मानावें। तरी जग हे सृजिलें आघवें।
जनकजननीपण स्वभावें। सहज आले अंगासी।।८।।
दीनानाथा प्रेमासाठी। भक्त रक्षिले संकटी।
प्रेम दिधलें अपूर्व गोष्टी। भजनासाठी भक्तांच्या।।९।।
आता परिसावी विज्ञापना। कृपाळुवा लक्ष्मीरमणा।
मज घालोनि गर्भाधाना। अलौकिक रचना दाखविली।।१०।।
तुज न जाणतां झालों कष्टी। आता दृढ तुझे पायीं घातलीं मिठी।
कृपाळुवा जगजेठी। अपराध पोटीं घालीं माझे।।११।।

माझिया अपराधांच्या राशी। भेदोनि गेल्या गगनासी।
दयावंता हृषीकेशी। आपुल्या ब्रीदासी सत्य करी।।१२।।
पुत्राचे सहस्त्र अपराध। माता काय मानी तयाचा खेद।
तेवीं तू कृपाळू गोविंद। मायबाप मजलागी।।१३।।
उडादांमाजी काळेगोरें। काय निवडावें निवडणारे।
कुचलिया वृक्षांची फळे। मधुर कोठोनि असतील।।१४।।
अराटीलागीं मृदुता। कोठोनि असेल कृपावंता।
पाषाणासी गुल्मलता। कैसियापरी फुटतील।।१५।।
आपादमस्तकावी अन्यायी। परी तुझे पदरीं पडिलो पाहीं।
आता रक्षण नाना उपायीं। करणे तुज उचित।।१६।।
समर्थाचिये घरींचे श्वान। त्यासी सर्वही देती मान।
तैसा तुझा म्हणवितों दीन। हा अपमान कवणाचा।।१७।।
लक्ष्मी तुझे पायांतळी। आम्हीं भिक्षेसी घालोनि झोळी।
येणे तुझी ब्रीदावळी। कैसी राहील गोविंदा।।१८।।
कुबेर तुझा भांडारी। आम्हा फिरविसी दारोदारीं।
यात पुरुषार्थ मुरारी। काय तुजला पैं आला।।१९।।
द्रौपदीसी वस्त्रे अनंता। देत होतासी भाग्यवंता।
आम्हांलागी कृपणता। कोठोनि आणिली गोविंदा।।२०।।
मावेची करूनी द्रौपदी सती। अन्ने पुरविलिं मध्यरात्रीं।
ऋषीश्वरांच्या बैसल्या पंक्ती। तृप्त केल्या क्षणमात्रे।।२१।।
अन्नासाठी दाही दिशा। आम्हा फिरविसी जगदिशा।
कृपाळुवा परमपुरुषा। करुणा कैसी तुज न ये।।२२।।
अंगीकारी या शिरोमणी। तुज प्रार्थितो मधुर वचनीं।
अंगीकार केलिया झणीं। मज हातीचे न सोडावें।।२३।।
समुद्रे अंगीकारिला वडवानळ। तेणे अंतरी होतसे विव्हळ।
ऐसें असोनि सर्वकाळ। अतरी सांठविला तयाने।।२४।।
कूर्मे पृथ्वीचा घेतला भार। तेणे सोडिला नाही बडिवार।
एवढा ब्रह्मांडगोळ थोर। त्याचा अंगीकार पै केला।।२५।।
शंकरे धरिलें हाळाहळा। तेणे नीळवर्ण झाला गळा।
परी त्यागिले नाही गोपाळा। भक्तवत्सला गोविंदा।।२६।।

माझ्या अपराधांच्या परी। वर्णितां शिणली वैखरी।
दुष्ट पतित दुराचारी। अधमाहूनि अधम।।२७।।
विषयासक्त मंदमति आळशी। कृपण कुव्यसनी मलिन मानसीं।
सदा सर्वकाळ सज्जनांसी। द्रोह करी सर्वदा।।२८।।
वचनोक्ति नाहीं मधुर। अत्यंत जनासी निष्ठुर।
सकळ पामरांमाजीं पामर। व्यर्थ बडिवार जगी वाजे।।२९।।
काम क्रोध मद मत्सर। हें शरीर त्यांचे बिढार।
कामकल्पनेसी थार। दृढ येथे केला असे।।३०।।
अठरा भार वनस्पतींची लेखणी। समुद्र भरला मषीकरूनी।
माझे अवगुण लिहितां धरणी। तरी लिहिले न जाती ।।३१।।
ऐसा पतित मी खरा। परी तूं पतितपावन शारङ्गधरा।
तुवां अंगीकार केलिया गदाधरा। कोण गुणदोष गणील।।३२।।
नीचा रतली रायासीं। तिसी कोण म्हणे दासी।
लोह लागतां परिसासी। पूर्वस्थिती मग कैंची।।३३।।
गांवीचे होते लेंडवोहळ। गंगेसी मिळतां गंगाजळ।
काकविष्ठेचे झाले पिंपळ। तयांसी निंद्य कोण म्हणे।।३४।।
तैसा कुजाति मी अमंगळ। परी तुझा म्हणवितो केवळ।
कन्या देऊनियां कुळ। मग काय विचारावे।।३५।।
जाणत असता अपराधी नर। तरी कां केला अंगीकार।
अंगीकारावरी अव्हेर। समर्थें केला न पाहिजे।।३६।।
धांव पाव रे गोविंदा। हातीं घेवोनियां गदा।
करी माझ्या कर्माचा चेंदा। सच्चिदानंदा श्रीहरी।।३७।।
तुझिया नामाची अपरिमित शक्ती। तेथें माझी पापें किती।
कृपाळुवा लक्ष्मीपती। बरवें चित्ती विचारीं।।३८।।
तुझे नाम पतितपावन। तुझे नाम कलिमलदहन।
तुझें नाम भवतारण। संकटनाशन नाम तुझें।।३९।।
आता प्रार्थना ऐका कमळापती। तुझे नामी राहो माझी मती।
हेंचि मागतों पुढतपुढतीं। परंज्योती व्यकटेशा।।४०।।
तूं अनंत तुझीं अनंत नामे। तयांमाजी अति सुगमे।
तीं मी अल्पमती सप्रेमें। स्मरूनि प्रार्थना करीतसें।।४१।।

श्रीव्यंकटेशा वासुदेवा। प्रद्युन्मा अनंता केशवा।
संकर्षणा श्रीधरा माधवा। नारायणा आदिमूर्ती।।४२।।
पद्मनाभा दामोदरा। प्रकाशगहना परात्परा।
आदि अनादि विश्वंभरा। जगदुद्धारा जगदीशा।।४३।।
कृष्णा विष्णो हृषीकेशा। अनिरुद्धा पुरुषोत्तमा परेशा।
नृसिंह वामन भार्गवेशा। बौद्ध कलंकी निजमूर्ति।।४४।।
अनाथरक्षका आदीपुरुषा। पूर्णब्रह्म सनातन निर्दोषा।
सकळमंगळ मंगळाधिशा। सज्जनजीवना सुखमूर्ती।।४५।।
गुणातीता गुणाज्ञा। निजबोधरूपा निमग्ना।
शुद्ध सात्त्विका सूज्ञा। गुणप्राज्ञा परमेश्वरा।।४६।।
श्रीनिधि श्रीवत्सलांच्छनधरा। भयकृद्भयनाशना गिरिधरा।
दुष्टदैत्यसंहारकरा। वीरा सुखकरा तूं एक।।४७।।
निखिल निरंजन निर्विकारा। विवेकखाणीवैरागवरा।
मधुमुरदैत्य संहारकरा। असुरमर्दना उग्रमूर्ती।।४८।।
शंखचक्रगदाधरा। गरुडवाहना भक्तप्रियकरा।
गोपीमनरंजना सुखकरा। अखंडित स्वभावें।।४९।।
नानानाटकसूत्रधारिया। जगद्व्यापका जगद्वर्या।
कृपासमुद्रा करुणालया। मुनिजनध्येया मूळमूर्ती।।५०।।
शेषशयना सार्वभौमा। वैकुंठवासिया निरुपमा।
भक्तकैवारिया गुणधामा। पाव आम्हा ये समयीं।।५१।।
ऐसी प्रार्थना करूनि देवीदास। अंतरी आठविला श्रीव्यंकटेश।
स्मरतां हृदयी प्रकटला ईश। त्या सुखासी पार नाही।।५२।।
हृदयी आविर्भवली मूर्ती। त्या सुखाची अलोलिक स्थिती।
आपुले आपण श्रीपती। वाचे हाती बोलवीतसे।।५३।।
तें स्वरूप अत्यंत सुंदर। श्रोतीं श्रवण कीजे सादर।
सावळी तनु सुकुमार। कुंकुमाकार पादपद्में।।५४।।
सुरेख सरळ अंगोळिका। नखे जैसीं चंद्ररेखा।
घोटींव सुनीळ अपूर्व देखा। इंद्रनीळाचिये परी।।५५।।
चरणीं वाळे घागरिया। वांकी वरत्या गुजरिया।
सरळ सुंदर पोटरिया। कर्दळीस्तंभाचियेपरी।।५६।।

गुडघे मांडिया जानुस्थळ। कटितटीं किंकिणी विशाळ।
खालते विश्वउत्पत्तिस्थळ। वरी झळाळी सोनसळा।।५७।।
कटीवरतें नाभिस्थान। जेथोनि ब्रह्मा झाला उत्पन्न।
उदरी त्रिवळी शोभे गहन। त्रैलोक्य संपूर्ण जयामाजी।।५८।।
वक्षःस्थळी शोभे पदक। पाहोनि चंद्रमा अधोमुख।
वैजयंती करी लखलख। विद्युल्लतेचियेपरी।।५९।।
हृदयी श्रीवत्सलांच्छन। भूषण मिरवी श्रीभगवान।
तयावरते कंठस्थान। जयासी मुनिगण अवलोकिती।।६०।।
उभय बाहुदंड सरळ। नखे चंद्रापरीस तेजाळ।
शोभती दोन्ही करकमळ। रातोत्पलाचियेपरी।।६१।।
मनगटी विराजती कंकणे। बाहुवटीं बाहुभूषणे।
कंठी लेइली आभरणे। सूर्यकिरणे उगवली।।६२।।
कंठावरुते मुखकमळ। हनुवटी अत्यंत सुनीळ।
मुखचंद्रमा अति निर्मळ। भक्तस्नेहाळ गोविंदा।।६३।।
दोन्ही अधरांमाजी दंतपंक्ती। जिव्हा जैसी लावण्यज्योती।
अधरामृतप्राप्तीची गती। जाणे लक्ष्मी ते सुख।।६४।।
सरळ सुंदर नासिक। जेथे पवनासी झाले सुख।
गंडस्थळींचे तेज अधिक। लखलखित दोहीं भागी।।६५।।
त्रिभुवनींचे तेज एकवटले। बरवेपण सिगेसी आले।
दोहीं पातयांनी धरिले। तेच नेत्र श्रीहरीचे।।६६।।
व्यंकटा भृकुटियां सुनिळा। कर्णद्वयांची अभिनव लीळा।
कुंडलांच्या फांकती कळा। तो सुखसोहळा अलोलिक।।६७।।
भाळ विशाळ सुरेख। वरती शोभे कस्तुरीटिळक।
केस कुरळे अलोलिक। मस्तकावरी शोभती।।६८।।
मस्तकी मुगुट आणि किरीटी। सभोवती झिळमिळ्यांची दाटी।
त्यावरी मयूरपिच्छांची वेठी। ऐसा जगजेठी देखिला।।६९।।
ऐसा तू देवाधिदेव। गुणातीत वासुदेव।
माझिया भक्तीस्तव। सगुणरूप झालासी।।७०।।
आता करू तुझी पूजा। जगज्जीवना अधोक्षजा।
आर्ष भावार्थ हा माझा। तुज अर्पण केला असे।।७१।।

करूनि पंचामृतस्नान। शुद्धामृत वरी घालून।
तुज करू मंगलस्नान। पुरुषसूक्ते करूनिया।।७२।।
वस्त्रें आणि यज्ञोपवित। तुजलागी करू प्रित्यर्थ।
गंधाक्षता पुष्पे बहुत। तुजलागी समर्पू।।७३।।
धूप दीप नैवेद्य। फल तांबूल दक्षिणा शुद्ध।
वस्त्रे भूषणे गोमेद। पद्मरागादि करूनि।।७४।।
भक्तवत्सला गोविंदा। ही पूजा अंगीकारावी परमानंदा।
नमस्कारोनि पादारविंदा। मग प्रदक्षिणा आरंभिली।।७५।।
ऐसा षोडशोपचारे भगवंत। यथाविधी पूजिला हृदयांत।
मग प्रार्थना आरंभिली बहुत। वर प्रसाद मागावया।।७६।।
जयजयाजी श्रुतिशास्त्रआगमा। जयजयाजी गुणातीत परब्रह्मा।
जयजयाजी हृदयवासिया रामा। जगदुद्धारा जगद्गुरु।।७७।।
जयजयाजी पंकजाक्षा। जयजयाजी कमळाधिशा।
जयजयाजी पूर्णपरेशा। अव्यक्तव्यक्ता सुखमूर्ती।।७८।।
जयजयाजी भक्तरक्षका। जयजयाजी वैकुंठनायका।
जयजयाजी जगपालका। भक्तांसी सखा तू एक।।७९।।
जयजयाजी निरंजना। जयजयाजी परात्परगहना।
जयजयाजी शून्यातितनिर्गुणा। परिसावी विज्ञापना एक माझी।।८०।।
मजलागी देई ऐसा वर। जेणे घडेल परोपकार।
हेचि मागणे साचार। वारंवार प्रार्थितसे।।८१।।
हा ग्रंथ जो पठण करी। त्यासी दुःख नसावे संसारी।
पठणमात्रे चराचरीं। विजयी करी जगाते।।८२।।
लग्नार्थियाचे व्हावे लग्न। धनार्थियासी व्हावे धन।
पुत्रार्थियाचे मनोरथ पूर्ण। पुत्र देऊनि करावे।।८३।।
पुत्र विजयी आणि पंडित। शतायुषी भाग्यवंत।
पितृसेवेसी अत्यंत रत। जयाचे चित्त सर्वकाळ।।८४।।
उदार आणि सर्वज्ञ। पुत्र देई भक्तालागून।
व्याधिष्ठाची पीडा हरण। तत्काळ कीजे गोविंदा।।८५।।
क्षय अपस्मार कुष्ठादि रोग। ग्रंथपठणे सरावा भोग।
योगाभ्यासियांसी योग। पठणमात्रे साधावा।।८६।।

दरिद्री व्हावा भाग्यवंत। शत्रूचा व्हावा निःपात।
सभा व्हावी वश समस्त। ग्रंथपठणे करूनिया।।८७।।
विद्यार्थियांसी विद्या व्हावी। युद्धीं शस्त्रें न लागावी।
पठणे जगात कीर्ती व्हावी। साधु साधु म्हणोनिया।।८८।।
अंती व्हावे मोक्षसाधन। ऐसे प्रार्थनेसी दीजे मन।
एवढे मागतो वरदान। कृपानिधे गोविंदा।।८९।।
प्रसन्न झाला व्यंकटरमण। देवीदासासी दिधले वरदान।
ग्रंथाक्षरी माझे वचन। यथार्थ जाण निश्चयेसी।।९०।।
ग्रंथी धरोनि विश्वास। पठण करील रात्रंदिवस।
त्यालागी मी जगदीश। क्षण एक न विसंबे।।।९१।।
इच्छा धरोनि करील पठण। त्याचे सांगतो मी प्रमाण।
सर्व कामनेसी साधन। पठण एक मंडळ।।९२।।
(एक मंडळ म्हणजे ४२ दिवस)
पुत्रार्थियाने तीन मास। धनार्थियाने एकवीस दिवस।
कन्यार्थियाने षण्मास। ग्रंथ आदरे वाचावा।।९३।।
क्षय अपस्मार कुष्ठादि रोग। इत्यादी साधने प्रयोग।
त्यासी एक मंडळ सांग। पठणे करूनि कार्यसिद्धी।।९४।।
हे वाक्य माझे नेमस्त। ऐसे बोलिला श्रीभगवंत।
साच न मानी जयाचे चित्त। त्यासी अधःपात सत्य होय।।९५।।
विश्वास धरील ग्रंथपठणी। त्यासी कृपा करील चक्रपाणी।
वर दिधला कृपा करूनि। अनुभवे कळो येईल।।९६।।
गजेंद्राचिया आकांतासी। कैसा पावला हृषीकेशी।
प्रल्हादाचिया भावार्थासी। स्तंभातूनि प्रगटला।।९७।।
वज्रासाठी गोविंदा। गोवर्धन परमानंदा।
उचलोनिया स्वानंदकंदा। सुखी केले तये वेळी।।९८।।
वत्साचे परि भक्तासी। मोहे पान्हावे धेनू जैसी।
मातेच्या स्नेह तुलनेसी। त्याचपरी घडलेसे।।९९।।
ऐसा तू माझा दातार। भक्तासी घालिसी कृपेची पाखर।
हा तयाचा निर्धार। अनाथनाथ नाम तुझे।।१००।।

श्रीचैतन्यकृपा अलोलिक। तोषोनिया वैकुंठनायक।
वर दिधला अलोकिक। जेणे सुख सकळांसी।।१०१।।
हा ग्रंथ लिहिता गोविंद। या वचनी न धरावा भेद।
हृदयी वसे परमानंद। अनुभवसिद्धी सकळांसी।।१०२।।
या ग्रंथीचा इतिहास। भावे बोलिला विष्णुदास।
आणिक न लागती सायास। पठणमात्रे कार्यसिद्धी।।१०३।।
पार्वतीस उपदेशी कैलासनायक। पूर्णानंद प्रेमसुख।
त्याचा पार न जाणती ब्रह्मादिक। मुनि सुरवर विस्मित।।१०४।।
प्रत्यक्ष प्रगटेल वनमाळी। त्रैलोक्य भजत त्रिकाळी।
ध्याती योगी आणि चंद्रमौळी। शेषाद्रीपर्वती उभा असे।।१०५।।
देवीदास विनवी श्रोतयां चतुरां। प्रार्थनाशतक पठण करा।
जावया मोक्षाचिया मंदिरा। काही न लागती सायास।।१०६।।
एकाग्रचित्ते एकांती। अनुष्ठान कीजे मध्यरात्री।
बैसोनिया स्वस्थचित्ती। प्रत्यक्ष मूर्ति प्रगटेल।।१०७।।
तेजे देहभावासी नुरे ठाव। अवघा चतुर्भूज देव।
त्याचे चरणी ठेवोनिया भाव। वरप्रसाद मागावा।।१०८।।

।। इति श्रीदेवीदासविरचितं श्रीव्यंकटेशस्तोत्रं संपूर्णम्।।